(गज़ल)
दो गजल

ख़ानाबदोश को तू मयस्सर है ऐ ख़ुदा
लड़की का इस जहां में कहां घर है ऐ ख़ुदा

औरत की आबरू है ... ख़सारा ज़हान का ...
इज्ज़त का बोझ क्यों उसी के सर है ऐ ख़ुदा

खामोशियां जो लड़ नही पाती है शोर से
रिश्तों का बेसबब सा कोई डर है ऐ ख़ुदा

कमज़र्फ हो गई है रिवायत जहान की
पर्दा किसी का कैसे मुक़द्दर है ऐ ख़ुदा

दुनिया के फ़लसफ़े ने इन्हें रोक रखा है
लड़ने दो गर ये दोनों बराबर है ऐ ख़ुदा

हिकमत मुझे ये ख़ुश्क से फूलों से है मिली
क्यों हाथ में मिरे ये गुल ए तर है ऐ ख़ुदा

इक बार सही ख़ुद से तो बेहतर तलाश कर

होती हो जहाँ औरतें मंज़र तलाश कर

पर्दों की बंदिशों में उसे ढूँढ रहा है

कमज़र्फ ज़रा दो घड़ी को घर तलाश कर

बेबाक सी हंसी जो ख़्वाहिशों के दम पे थी

औरत की जुस्तज़ू में भी दफ़्तर तलाश कर

बस ज़र्फ़ तेरा देखने को रह गई है वो

इंसानियत को ख़ुद के तू भीतर तलाश कर

सदियों की रिवायत को जो दरिया में बहा दे

दुनिया के वास्ते वो समंदर तलाश कर

औरत को जहां की तलब में डालने वाले

अपने जहां के वास्ते बेहतर तलाश कर

शुभांगी भारती
वनस्पति विज्ञान
2022-25
10271